कौशल विकास में अंतर: महिलाएं, समय की कमी और भारत का एआई भविष्य

यूपीएससी प्रासंगिकता - जीएस पेपर I - भारतीय समाज - आर्थिक विकास में महिलाओं और महिला संगठनों की भूमिका

चर्चा में क्यों?

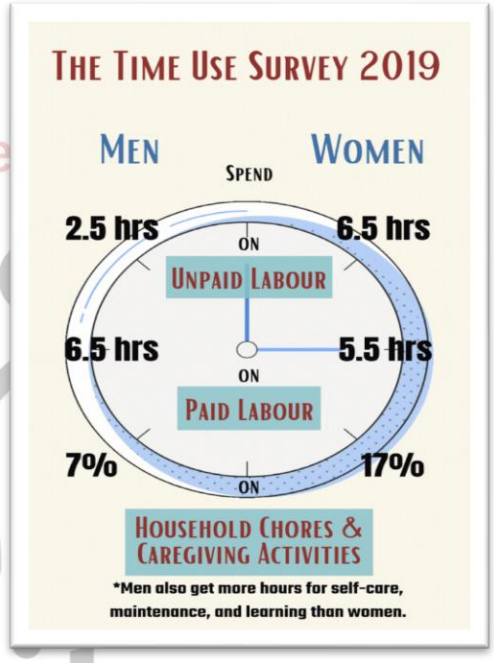

भारत के **'टाइम यूज़ सर्वे** (Time Use Survey), 2024' के निष्कर्षों से पता चलता है कि कामकाजी महिलाएँ पुरुषों की तुलना में सवैतनिक (Paid) और अवैतनिक (Unpaid) कार्यों पर काफी अधिक समय खर्च करती हैं। इसके कारण उनके पास स्वयं के विकास और कौशल बढ़ाने (Upskilling) के लिए पुरुषों की तुलना में प्रति सप्ताह लगभग **10 घंटे कम** बचते हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और ऑटोमेशन (स्वचालन) के दौर में, समय की यह कमी रोजगार और उत्पादकता में लैंगिक असमानता को और अधिक बढ़ाने का खतरा पैदा करती है।

पृष्ठभूमि: 'डबल शिफ्ट' की वास्तविकता

भारत में श्रम बल में महिलाओं की भागीदारी (LFPR) धीरे-धीरे बढ़कर लगभग 40% हो गई है। हालांकि, यह संख्यात्मक प्रगति एक गहरे संरचनात्मक असंतुलन को छिपा लेती है। सवैतनिक कार्य में महिलाओं की भागीदारी बढ़ने के साथ-साथ उनके घरेलू और देखभाल संबंधी अवैतनिक कार्यों के बोझ में कोई कमी नहीं आई है।

काम के 'प्रतिस्थापन' (Substitution) के बजाय यहाँ काम का 'अंबार' (Stacking) लग रहा है। कामकाजी महिलाएँ **"डबल शिफ्ट"** करती हैं: दिन में सवैतनिक नौकरी और घर पर अवैतनिक श्रम, जिसमें खाना बनाना, सफाई, बच्चों और बुजुर्गों की देखभाल, और भावनात्मक प्रबंधन शामिल है। आर्थिक गणनाओं में यह अवैतनिक श्रम अदृश्य रहता है, जबकि यह सामाजिक स्थिरता के लिए अपरिहार्य है।

'टाइम यूज़ सर्वे' (Time Use Survey) के प्रमाण

सर्वेक्षण इस वास्तविकता को पुख्ता आंकड़ों के साथ पेश करता है:

- **महिलाओं के काम के कुल घंटे अधिक:** कामकाजी महिलाएँ सवैतनिक और अवैतनिक कार्यों पर प्रतिदिन औसतन **9.6 घंटे** खर्च करती हैं, जबकि पुरुषों के लिए यह आंकड़ा **8.6 घंटे** है।
- **प्रधान कार्य वर्षों (25–39 वर्ष) में बोझ का चरम:** इस आयु वर्ग में महिलाओं का कुल कार्यभार अक्सर प्रति सप्ताह **70 घंटे** से अधिक हो जाता है, जिसका मुख्य कारण बच्चों की देखभाल और घरेलू जिम्मेदारियां हैं।

- **पुरुषों का कार्य मुख्य रूप से सवैतनिक:** पुरुषों के काम के समय का 80% से अधिक हिस्सा भुगतान वाले कार्यों के लिए होता है, जबकि सभी आयु समूहों में अवैतनिक कार्य का हिस्सा बहुत कम और स्थिर रहता है।

इस प्रकार, महिलाएँ कुल मिलाकर अधिक घंटे काम करती हैं, लेकिन उनके श्रम का एक बड़ा हिस्सा अवैतनिक और गैर-मान्यता प्राप्त रहता है।

छिपी हुई लागत: नींद की कमी और कौशल की कमी

IAS-PCS Institute

जब महिलाएँ अपना कार्यभार कम करने में असमर्थ होती हैं, तो वे अपनी भलाई का त्याग करके समझौता करती हैं:

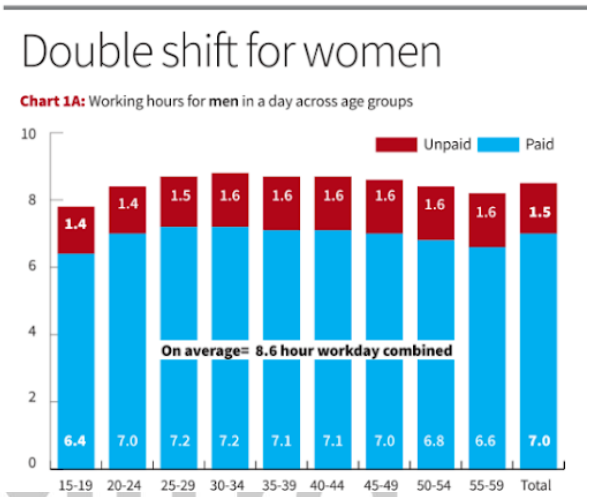

- अपने प्रधान कार्य वर्षों के दौरान महिलाएँ पुरुषों की तुलना में प्रति सप्ताह **2 से 2.5 घंटे कम नींद** लेती हैं।
- वे अपने स्वयं के विकास, जैसे शिक्षा, कौशल संवर्धन, और मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रति सप्ताह **10 से 12 घंटे कम** खर्च कर पाती हैं।

सीखने के समय में यह व्यवस्थित कटौती दीर्घकालिक परिणाम पैदा करती है, विशेष रूप से ऐसे बाजार में जहाँ निरंतर नया सीखने और अनुकूलन क्षमता को पुरस्कृत किया जाता है।

Result Mitra
रिजल्ट का साथी
9235313184, 9235440806

AI युग में कौशल अंतराल का महत्व

AI-संचालित अर्थव्यवस्था निम्नलिखित की मांग करती है:

1. निरंतर अपस्किलिंग (Upskilling) और रीस्किलिंग (Reskilling)।
2. डिजिटल और तकनीकी साक्षरता।
3. नियमित (Routine) कार्यों से उच्च-मूल्य वाले कार्यों की ओर स्थानांतरण।

हालांकि, महिलाएँ यहाँ कई स्तरों पर नुकसान का सामना करती हैं:

- वे कम वेतन वाली और ऑटोमेशन के जोखिम वाली नौकरियों में अधिक केंद्रित हैं।
- अवैतनिक देखभाल कार्य के कारण उनके पास समय की भारी कमी है।
- AI-आधारित उत्पादकता मानक अक्सर देखभाल की जिम्मेदारियों को नजरअंदाज करते हैं, जो अप्रत्यक्ष रूप से महिलाओं को दंडित करते हैं।

परिणामस्वरूप, AI मौजूदा लैंगिक असमानताओं को कम करने के बजाय उन्हें और अधिक मजबूत करने का जोखिम पैदा करता है।

महिलाओं की 'समय की गरीबी' को दूर करने में चुनौतियाँ

- **अदृश्य श्रम:** राष्ट्रीय आय गणना और नीति निर्माण में अवैतनिक देखभाल कार्य को मान्यता न मिलना।
- **जेंडर बजटिंग की सीमाएँ:** समय-उपयोग के आंकड़ों को शामिल किए बिना जेंडर बजटिंग का क्रियान्वयन प्रभावी नहीं हो पाता।
- **बुनियादी ढांचे की कमी:** सस्ती शिशु देखभाल (Childcare) और बुजुर्गों की देखभाल के बुनियादी ढांचे का अभाव।
- **कठोर कौशल कार्यक्रम:** कौशल विकास कार्यक्रम अक्सर महिलाओं की समय की बाधाओं और गतिशीलता (Mobility) की सीमाओं को ध्यान में नहीं रखते।

GDP विरोधाभास और श्रम बाजार से अलगाव

भारत की GDP में महिलाओं का योगदान केवल 17% के करीब है। इसका कारण उनकी योग्यता की कमी नहीं, बल्कि आर्थिक मूल्यांकन से उनके अवैतनिक श्रम का व्यवस्थित बहिष्कार है। 'पीरियोडिक लेबर फोर्स सर्वे' (PLFS) के अनुसार, श्रम बल से बाहर लगभग 40% महिलाओं ने घरेलू जिम्मेदारियों को प्राथमिक कारण बताया है।

संवैधानिक और नीतिगत दृष्टिकोण

@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

भारतीय संविधान इस असंतुलन को दूर करने के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करता है:

- **अनुच्छेद 15(3):** राज्य को महिलाओं के लिए विशेष प्रावधान करने का अधिकार देता है।
- **अनुच्छेद 39(d):** समान कार्य के लिए समान वेतन का आदेश देता है।
- **अनुच्छेद 42:** काम की न्यायसंगत और मानवीय परिस्थितियों और मातृत्व राहत सुनिश्चित करने का निर्देश देता है।

देखभाल के बोझ को संबोधित न करना इन संवैधानिक प्रावधानों की भावना को कमजोर करता है।

आगे की राह: नौकरी बढ़ाने से समय की मुक्ति तक

सच्चा सशक्तिकरण केवल महिलाओं के पहले से ही अत्यधिक बोझ वाले कार्यक्रम में सवैतनिक कार्य जोड़कर प्राप्त नहीं किया जा सकता। नीति का लक्ष्य महिलाओं के **समय को मुक्त करना** होना चाहिए।

प्रमुख हस्तक्षेप:

1. **समय-उपयोग डेटा का एकीकरण:** जेंडर बजटिंग में समय को एक आर्थिक संसाधन के रूप में माना जाए।
2. **समय बचाने वाले बुनियादी ढांचे में निवेश:** किफायती चाइल्डकेयर, पाइप से पानी की आपूर्ति, स्वच्छ खाना पकाने की ऊर्जा और सुरक्षित सार्वजनिक परिवहन।
3. **लचीले कौशल मॉडल:** महिलाओं की समय और गतिशीलता की बाधाओं के अनुरूप कौशल विकास कार्यक्रमों को डिजाइन करना।
4. **लक्षित पहल:** 'इंडिया AI मिशन' और 'महिलाओं के लिए AI करियर' जैसी पहलों का विस्तार करना।

निष्कर्ष

2047 तक 'विकसित भारत' बनने का सपना तब तक साकार नहीं हो सकता जब तक हमारी आधी कार्यशक्ति 'समय की गरीबी' में फंसी रहेगी। महिलाओं में योग्यता या महत्वाकांक्षा की कमी नहीं है; वे अवैतनिक देखभाल कार्य के असमान वितरण से विवश हैं।

इस अदृश्य श्रम को **पहचानना (Recognise), कम करना (Reduce) और पुनर्वितरित करना (Redistribute)** न केवल लैंगिक न्याय के लिए जरूरी है, बल्कि AI के युग में समावेशी और सतत विकास के लिए एक आर्थिक आवश्यकता भी है।

मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: भारत में श्रम बल में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी के बावजूद, अवैतनिक देखभाल कार्यों में लैंगिक असमानता बनी हुई है। चर्चा कीजिए कि 'समय की गरीबी' (Time Poverty) AI-संचालित अर्थव्यवस्था के संदर्भ में महिलाओं के सशक्तिकरण और कौशल विकास को कैसे प्रभावित करती है? (10 अंक)

IAS PCS Institute
Result Mitra
रिजल्ट का साथी
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806